Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

छत्तीसगढ़ी लोक गीतों की परम्परा में पर्व गीत

डॉ. श्रीमती गायत्री साहू
दुर्ग छत्तीसगढ़

पर्वगीत– छत्तीसगढ़ में जहाँ देश के प्रमुख पर्व प्रचलित हैं, वही लोक जीवन से रंजित एवं लोक मानस की आशा एवं विश्वास के प्रतीक विभिन्न पर्व प्रचलित है। छत्तीसगढ़ी पर्व गीतों में भोजली, सुवा,गौरा,कर्मा, मड़ई, होरी, डंडा और जँवारा गीत प्रमुख है।

भोजली - भोजली छत्तीसगढ़ का शाक्त परंपरा का प्रतीक है। इसमें बालिकाएँ और युवतियाँ भोजली के प्रति अनन्य श्रद्धा का भाव रखते हुई सुखद भविष्य की याचना करती है। भोजली कृषि संस्कृति से अनुप्राणित और दो आत्माओं के मिलन का प्रतीक है। भोजली गीत की अधोलिखित पंक्तियों में बालिकाएँ और युवतियाँ निश्छल आराधना की अभिव्यक्ति करती है -

प्रस्तावना–

देवी गंगा देवी गंगा लहर तुरंगा
हाम्रो भोजली दे दाई के भीजै आठो अंगा।
अहो देवी गंगा
कुटि डारेन धान पछिन डारेन भूँसा
लइका लइका हाबन दाई झन करहु घुस्सा।

सुवा गीत - 'सुवा गीत' छत्तीसगढ़ की महिलाओ का नृत्य गीत है जो दीपावली से प्रारम्भ होकर प्रबोधनी एकादशी तक गतिमान रहता है। स्त्रिया एक टोकनी में मिटटी का सुवा रखकर उसको चारो ओर वृत्त बनातीहुईताली का सहारा लेकर इस नृत्य गीत को प्रस्तुत करती है। सुगे की तरह फुदकती हुए ये मानो सुवा नृत्य प्रस्तुत करती है। यहीलौकिक अर्थ में प्रिय और प्रिया तथा अलौकिक अर्थ में आत्मा और परमात्मा में मध्य सन्देश वाहक का कार्य करता है। इसके अलावा प्रश्नोत्तरी शैली और लम्बे आख्यानों को इस लोकगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। अधोलिखित सुवा गीत की पंक्तियों में लोक गीत प्रकृति के कितना समीप है, इसका आभास होता है -

चोंच तोर दिखत हे , लाली लाली कुंदरू
रे मोरे सुवा आँखी मसूरी के दार।
जोंधरी पाना साही डेना सँवारे,
रे मोरे सुवा सुन ले बे बिनती हमार।।

डंडा गीत - 'डंडा गीत' पुरुषो का नृत्य गीत है जिसमे डंडे की ताल और गायन मंडली का लयात्मक स्वर सम्पृक्त होता है। बीच बीच में एक भक्ति पंचम स्वर में चिल्लाता है जिसे 'टेही' पारना कहते है। डंडा गीत प्रायः अध्यात्म प्रधान है। इसके बावजूद इसमें हास्य करूण रस भी समावेशित है। डंडियों की चोट में ये लोकगीत की अंतरात्मा की चोट करते हुए कहता है कि जीवन आसार है केवल राम नाम ही सार है।1.

जँवारा गीत - भोजली की तरह जँवारा गीत भी शाक्त धर्म से सम्बंधित है। इसमें युवक और बड़े बूढ़े सभी जँवारा अर्थात दुर्गा की सेवा में गीत गाते हैं। इसी आधार पर इसे जस या सेवा गीत कहा जाता है। नवरात्री तक भक्ति भाव से गाए जाना वाला या छत्तीसगढ़ी लोक गीत 'नवरात' भी कहलाता है। इसका आयोजन वर्ष में दो बार आश्विन शुक्ल पक्ष दुर्गा नवमीं और चैत शुक्ल पक्ष राम नवमीं को संपन्न होता है। छत्तीसगढ़ी लोक वाद्य मांदर(मृदग) में ये लोकगीत जन-मन को भक्ति भाव से अपल्वित करने में समर्थ होता है। जँवारा वास्तव में दुर्गा माँ की बगिया है जो जौं या गेहूँ के पौधे के रूप संस्थित होता है। इसी कारण लोग जँवारा को माँ की बगिया कहते है। छत्तीसगढ़ दुर्गा की आंचलिक संचलन महामाया या महामायी के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी ही आराधना के गीत विशेष घुन के साथ यहाँ प्रचलित है –

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

पहली सुमरणी करौ न
मोर चंडी माता दे दे आशीष वरदान।
हाथ में नरियर फूल के माला ले के तोला चढ़ावो
हूम् देवो मैं धूम- धुप के घी के दीया जलाओ
मोरे चंडी ओ माता.....|

करमा गीत - करमा छत्तीसगढ़ का प्रमुख लोकगीत नृत्य है। इसकी अनेक शैलिया प्रचलित है। करमा के प्रकार अधोलिखित है -
1 झूमर कर्मा गीत - यह झूम - झूम के गायाजाता है इसलिए इसे झूमर कर्मा गीत कहते है।
२ लक्कड़गा करमा गीत - यह घुटने के बल पर नृत्य करते हुए गाया जाता है इसलिए इसे लक्कड़गा करमा गीत कहते है।
३ लहकी करमा गीत - एक दूसरे से लपकते हुए आपस में मिलते हुए गीत गाया जाता है इसलिए इसे लहकी करमा गीत कहते है।
४ ठाड़ा करमा गीत - खड़े खड़े गाया जाता है इसलिए इसे ठाड़ा करमा गीत कहते है।
५ रागिनी करमा गीत - राग के माध्यम से गाया जाता है इसलिए रागिनी करना गीत कहते है।
इन गीतों में लड़कियाँ भी साथ में गाती है ।

डॉ विनयकुमार पाठक के अनुसार - 'भाद्र शुक्ल एकादशी' को व्रत रखकर करमसेमी वृक्ष की पूजा - अर्चा के साथ शरद की ज्योत्स्नामयी रात्रि में करमा संपन्न होता है। छत्तीसगढ़ी जनमानस की उद्दाम-प्रेम भावनाओ की सफलता असफलता का प्रतीक है करमा। जिसमे नर- नारी का समायोजन पूर्ण मानव की गाथा कहने में पर्याप्त है। नर-नारी परस्पर हस्त या कंधे पकड़कर अतीत के सुखद क्षणों के साथ भावी जीवन को सुमधुर कल्पित स्वध्निलभावनाओ में गेयता का स्वरुप देकर सहजाभिव्यक्ति करते है। विशिष्ट नृत्य में ढले , पैरो की थाप, झाँझर - डाल मांदल की संगीत बद्ध स्वर लहरी कर पायल की छन छन की सम्मोहक आकर्षक ध्वनि का त्रिकोणात्मक समन्वय वातावरण को श्रृंगार - रस के सराबोर करने में सक्षम - समर्थ होता है। 'करमा' हृदय के सौंदर्य को , मन की विव्हळता को, चेतना की अतृप्ति को , निर्दिष्ट कराने का नाम है।2.

करमा गीत वस्तुतः छत्तीसगढ़ भी भाषा है। छत्तीसगढ़ जीवन दर्शन , छत्तीसगढ़ का मानचित्र करमा का उपजीव्य है -

चला नाचे जाबो रे , गोलेन्दा जोड़ा
करमा तिहार आये हे , नाचे ला जाबो रे
पहिली में सुमरों सरसती माई रे
पाछु गौरी गणेश रे गोलेन्दा जोड़ा
गांव के देवी देवा के पइया लागो रे
गोड़ लागो गुरु देव के रे गोलेन्दा जोड़ा | 3.

गौरा-गीत- छत्तीसगढ़ शैव धर्म से सम्बंधित लोकगीत गौरा गीत कहलाता है परिनिष्ठित हिंदी के स्त्री लिंग शब्द 'गौरी ' से इसका समीकरण किया जा सकता है। गौरी का अर्थ पार्वती है , जिसके पति शिवजी को 'गौरा' नाम से अभिहित करना छत्तीसगढ़ी जनमानस की विशिष्टता है। गौरी के महत्व को दर्शाने के लिए ही शिव जी का नाम गौरा रखा गया , यहाँ स्पष्ट है। छत्तीसगढ़ी के गौरा - गीतों में इस बात का संकेत मिलता है। 4.

दीपावली के अवसर पर गौरी - गौरा का विवाह होता है। इसी दिन कुम्हार के यहाँ मिटटी और चमकीले कागज से बने गौरा - गौरी को चिताकार्षक मूर्तियों को विधि- विधान से पूजा-अर्चा करके ले जाया जाता है। रात्रि पर्यन्त गौरा गीत गूंजता है और इसके बाद दूसरे दिन गांव के तालाब या नदी में इसका विसर्जन होता है। गौरा -गौरी की यहाँ मूर्ति छत्तीसगढ़ की लोक मूर्तिकला का अनुपम उदहारण है। मांदर और मंजीरे के साथ स्त्रियाँ बांस की तीलियों से निर्मित उथले पत्र 'पर्रा ' में लाई और दीपक रखकर गीत गाती है -

'महादेव दुलरू बन आइन, धियरी गौरा हाँसिन हो
मयना रानी रोवे लागिन भुत परेतया नाचिन हो।
' चंदा कहाँ रे पायो दुलरू गंगा कहाँ ले पायी हो

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

सांप कहाँ ले पायो ईसर काबर भभूत रमायो हो।।
' गौरा बार हम जोगिन बन गयेन , अंग भभूत रमायेन हो
बैला ऊपर चढ़के हम तो , बन-बन अलख जगायेन हो
अचहड लहर पटोरना , बछवा दाइज दीन्हेंसि हो
हार नौलखा पाइन गौरा, महादेव मुसकाइन हो। '
आनवर होगै भावर होगै, खाइन बरा सौंहारी हो
गौरा महादेव सेमीजी , हमर बाप महतारी हो। ' 5.

मड़ई - मड़ई गीत छत्तीसगढ़ी यदुवंशियों द्वारा गाये जाने वाला लोक गीत है। लोक - वाद्य विशेष 'गँडवाबाजा' के साथ गाया व् नाचा जाता है , इसीलिये इसे 'रावत नाचा व रौताही' कहा जाता है। इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पक्ष में रेखांकित करते हुए डॉ विनयकुमार पाठक लिखते हैं कि - 'मड़ई ' गो- पूजन के उपलक्ष्य में मनाया जाने वाला वेद-काल की इन्द्रध्वज परंपरा का प्रतीक और कृषि से सम्बंधित विशेषतः छत्तीसगढ़ के ग्वालो का पर्व है। सज्जित मढ़ई आर्य , निषाद व द्रविड़ संस्कृतियों के समन्वित तत्वों को अक्षुण्ण रखता है।6. गोवर्धन पूजा के आस पास से प्रारंभ 'मढ़ई ' गीत नृत्य कार्तिक पूर्णिमा तक संचालित होता है। इसमें श्री कृष्णकेवंशज होने के कारण संस्कृति आदि का दर्शन होता है। 'दहियान' में पूजा करके ये राउत अपने गोस्वामियों और किसानो के यहाँ जाते हैं और गाय के गले में 'सुहई ' बांधकर मंगल कामना का दोहा उच्चारित करते हैं -

धान गोदानी भुईआ पावौ, पावौ हमर असीस।
नाती पूत ले घर भर जावै, जीवौ लाख बरीस ।।

या फिर गाय को ही सम्बोधित करते हुए कहते हैं –

चार महीने चराये न , खायै न मही के मोरे।
आइस कार्तिक महीना लछमी , छूटेन तोरे बिछौरे ।।7.

होरी- होली के अवसर पर यहाँ प्रचलित छत्तीसगढ़ी लोकगीत होरी या फाग कहलाता है। इस गीत में श्री कृष्ण मुख्यकेंद्र बिंदु हैं, और राधा की प्रणय -याचना तथा विविध प्रेम प्रसंग इन गीतों को जहाँ श्रृंगार रस से सराबोर करते हैं , वहीं हास्य यायत्किंचित् समाहार मनोरंजन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करता है। स्पष्ट है किश्रृंगार और हास्य फाग गीत का विशेष राग है। मांदर और झांझ में यहाँ गीत उभरता है। श्री कृष्ण को आह्वान करता हुआ लोक गीतकार कहता है –

राधे बिना होली न होय,
शहर में दे दे बुलावा राधे को

छत्तीसगढ़ की धरती वृन्दावन के पर्यावरण में परिवर्तित प्रतीत होता है –

कुंज बन बंसुरी बजा रहे कान्हाअ
कुंज बन बंसुरी बजा रहे
अरे हाँ सहर में दे दे बुलौवा राधे को

अधोलिखित होरी गीत में राधा और कृष्ण आत्मा और परमात्मा तथा राजा और प्रजा के प्रतीकार्य प्रस्तुत है -

बजे नगारा दसों जोड़ी हां , राधा किशन खेलें होरी।
दोनों हाथ धरैं पिचकारी , धरैं पिचकारी धरैं पिचकारी।।
रंग गुलाल सबैं बोरी हाँ , राधा किशन खेलैं होरी।।
दुधुवा दहिया बचैन पाइस , आहुम रंग पिहिन होरी।
हाँ राधा किशन.सब सखियाँ मिल पकड़ किशन लाओ ही , रंग में दै बोरी।
हाँ राधा किशन तब राधा मुस्काय कहिन, हो अऊ खेलिहौ तुम होरी।।
हाँ राधा किशन ..... .

Global Journal of Multidisciplinary Studies
Volume 8, Issue 6, May 2019
ISSN:- 2348-0459
Available online at www.gjms.edwin.co.in

संदर्भग्रंथोंकीसूची -

1.छत्तीसगढ़ के परिनिष्ठित एवं लोक साहित्य की तुलनात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन - डॉ विनय कुमार पाठक, पृष्ठ - 165
2.छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त परिनिष्ठित हिंदी और इतर भाषाओं के शब्दों में अर्थ - परिवर्तन - डॉ विनय कुमार पाठक, पृष्ठ - 22 -23
3.करमा गीतों का लोक तात्विक अनुशीलन - देवधारदास महंत , परिशिष्ट
4.छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त परिनिष्ठित हिंदी और इतर भाषाओं के शब्दों में अर्थ - परिवर्तन - डॉ विनय कुमार पाठक, पृष्ठ - 96
5.श्री शुक्ल अभिनन्दन ग्रन्थ - कला साहित्य खंड , पृष्ठ - 141
6.छत्तीसगढ़ी में प्रयुक्त परिनिष्ठित हिंदी और इतर भाषाओं के शब्दों में अर्थ - परिवर्तन - डॉ विनय कुमार पाठक, पृष्ठ - 23
7.छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य का अध्ययन - डॉ शकुंतला वर्मा , पृष्ठ 150
8.वहींपृष्ठ 155